10–15 दिन बाद भूमि उपचार करें।

खरपतवार प्रबन्धन :–

तिल की खरीफ फसल में खरपतवारों से 50 प्रतिशत उपज में कमी आ जाती है इसके प्रबन्धन हेतु खेतों की गर्मी की जुताई करें। गोबर की खाद पूरी तरह सडी हुयी ही प्रयोग करें। बुआई से पूर्व वर्षा होने पर 1–2 बार जुताई करके घास को नष्ट कर दें। इसके सफल नियंत्रण हेतु :–

1. **निराई गुडाई :–** बुआई के 15 एवं 35 दिन बाद दो बार निराई गुडाई करने से घास नष्ट हो सकती है।
2. **रासायनिक विधि :–** इसके लिये पैण्डीमैथालीन 1.0 ली0 सक्रिय तत्व प्रति हे0 बुआई के तुरन्त बाद 800 ली0 पानी में मिलाकर फ्लैट फैन नोजल से पीछे को हटते हुये छिडकाव कर भूमि पर रसायन की चादर बिछाते हैं। इसके पश्चात् घास होने पर बुआई के 25 दिन बाद घास होने पर एक निराई करते हैं।

सिंचित दशा में बुआई के तुरन्त बाद एलाक्लोर 2.0 कि0ग्रा0/हे0 या मैदाक्लोर 1.0 कि0ग्रा0/हे0 की दर से 800 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करें तथा घास होने पर 25–30 दिन बाद एक निराई करें।

हल्की भूमियों में रासायनों का प्रभाव अच्छा पडता है। जबकि भारी भूमियों में ढेले बनने के कारण रसायन कम प्रभावी होते है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

कृषि विज्ञान केन्द्र, बाँदा

प्रसार निदेशालय

बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा

संपर्क सूत्र- 9450791440

Web Portal: www.kvk.icar.gov.in

website: www.banda.kvk4.in

E-mail- kvkbanda@gmail.com

वित्त पोषित - **अनुसूचित जाति उप योजना**

भा.कृ.अनु. प.- कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान

जोन-3 कानपुर

तिल में पोषक तत्व एवं खरपतवार प्रबन्धन

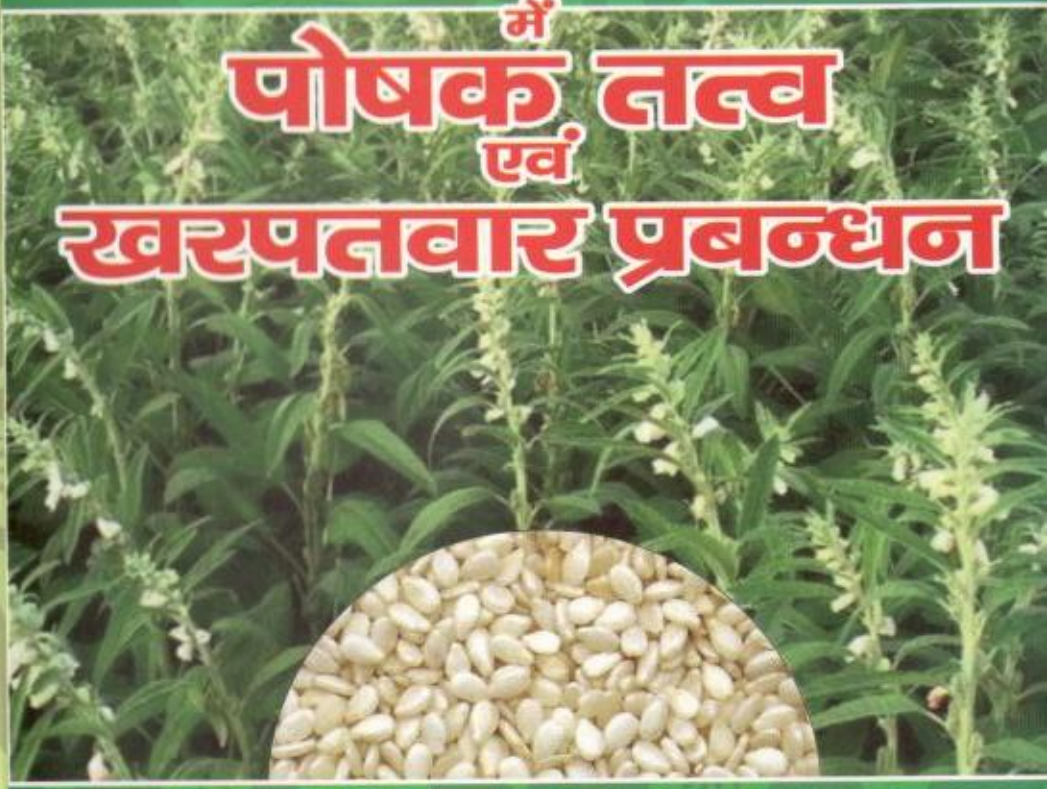

डा0 श्याम सिंह, डा0 प्रज्ञा ओझा, डा0 चंचल सिंह , डा0 दीक्षा पटेल, डा0 पंकज कुमार ओझा, डा0 नरेन्द्र सिंह एवं डा0 एन0के0 बाजपेयी

विस्तार पत्रक/बीयूएटी/के0वी0के0-बाँदा/2025/90

कृषि विज्ञान केन्द्र, बाँदा

प्रसार निदेशालय

बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा-210001, उ.प्र.

तिल में पोषक तत्व एवं खरपतवार प्रबन्धन

बांदा जनपद एवं बुन्देलखण्ड में तिल खरीफ की प्रमुख एवं महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है। इसको 60 से 100 मि0मी0 औसत वर्षा वाले क्षेत्रों में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। एवं अधिक वर्षा की स्थिति में भी उचित जल निकास का प्रबन्धन कर इसकी अच्छी पैदावार ली जा सकती है। कम अवधि (लगभग 75–100 दिन) में तैयार होने वाली इस फसल में सभी तिलहनी फसलों से ज्यादा (46 से 51 प्रतिशत) तेल पाया जाता है एवं इसका तेल भी गुणवत्ता वाला होता है।

कम लागत एवं अन्ना पशुओं द्वारा फसल को कम क्षति के कारण बांदा जनपद में इसकी खेती बहुत बडे क्षेत्रफल पर की जाती है परन्तु खराब पोषण व्यवस्था एवं खरपतवार को उचित प्रबन्धन न करने के कारण इसकी उत्पादकता बहुत कम है। यदि फसल में पोषक तत्वों एवं खरपतवारों का उचित प्रबन्धन किया जाये तो जनपद बांदा के ढालू खेतों में इसकी पैदावर 5–6 कु0 / हे0 तक बढायी जा सकती है।

पोषक तत्व प्रबन्धन :–

फसल बुआई से पूर्व मिटटी की जांच कराकर प्राप्त परिणामों के अनुसार अनुमोदित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करना सर्वोत्तम रहता है। मृदा जांच न कराने की स्थिति में सामान्य भूमियों में असिंचित दशा में नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश की क्रमशः 23 कि0ग्रा0, 13 कि0ग्रा0 एवं 13 कि0ग्रा0 मात्रा प्रयोग करना चाहिये। सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर 60 कि0ग्रा0 नत्रजन, 40 कि0ग्रा0 फास्फोरस, 40 किग्रा0 पोटाश एवं 30 कि0ग्रा0 सल्फर प्रति हे0 की दर से प्रयोग करना लाभकारी रहता है। सभी उर्वरकों की सम्पूर्ण मात्रा बुआई से पूर्व खेत में मिला दें या मशीन से बुवाई करते समय कूंडों में प्रयोग करें। तिल की फसल में सूक्ष्म तत्वों का महत्व ज्यादा है। इनकी कमी होने पर पैदावार

एवं उपज की गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव पडता है। इसमें जिंक व मैंगनीज प्रमुख हैं।

मैग्नीज की कमी के लक्षण –

इसकी कमी होने पर पत्ती की शिरायें तो हरी बनी रहती हैं, परन्तु शेष पत्ती सफेद रंग की हो जाती है। जो धीरे–धीरे भूरे रंग की होकर अन्त में सूख जाती है। इसकी पूर्ति के लिये मैग्नीज सल्फेट का प्रयोग 5 कि0ग्रा0 / हे0 की दर से बुआई के समय भूमि में करना चाहिये।

जिंक की कमी के लक्षण :–

जिंक की कमी में पौधे की मध्य की पत्तियों में शिरा को छोडकर शेष पत्ती झुलस सी जाती है और ऊपर की नयी पत्तियों में किनारे से सडन (झुलसा) होती है। इसकी पूर्ति के लिये बुआई के समय 20–25 कि0ग्रा0 जिंक सल्फेट का भूमि में प्रयोग करना चाहिये।

छिडकाव द्वारा पोषण :–

यदि बुआई के समय पूरी खाद नहीं डाल पायें अथवा खडी फसल में बढवार कम हो तो प्रथम फूल आने की अवस्था पर 01 प्रतिशत डी0ए0पी0 का पहला छिडकाव करें तथा 10 दिन बाद दूसरा छिडकाव करने में पैदावार बढती है।

बायोफर्टिलाईजर व जैविक खादों का प्रयोग:–

रासायनिक उर्वरकों की उपयोग क्षमता बढाने एवं मृदा स्वास्थ्य में सुधार के लिये बायोफर्टिर्लाजर एवं रासायनिक उर्वरकों का एकीकृत उपयोग किया जाता है। उनके प्रयोग से 25–40 प्रतिशत रासायनिक उर्वरकों में कटौती की जा सकती है। एजोस्पीरिलियम तथा फास्फोवैक्टिीरिया के 3–3 पैकेट से 5 कि0ग्रा0 बीज को उपचारित कर लें अथवा इनके 10–10 पैकेट को 2 कु0 गोबर की खाद में मिलाकर